राज्योत्सव 2010 के प्रमुख रंग

पार्श्व गायक – कृष्णकुमार मेनन (के.के.)

फिल्म संगीत में अपनी विलक्षण आवाज और गायकी से स्थापित कलाकार कृष्णकुमार मेनन को **के.के.** के नाम से पहचाना जाता है। फिल्म **जिस्म** में **आवारापन, बंजारापन...** गीत से एक ताजगी का अहसास कराने वाले **के.के.** ने अपने बचपन से पढ़ाई तक का समय दिल्ली में ही गुजारा। विज्ञापन की दुनिया में तीन हजार से ज्यादा उत्पादों के जिंगल को अपनी आवाज देकर **के.के.** ने एक खास मुकाम बनाया है। पॉप और रॉक में अपनी धाक जमा चुके **के.के.** को **हम दिल दे चुके सनम** फिल्म के गीत– **तड़प तड़प के...** से एक नई पहचान मिली। सुरों के इस पक्के साधक को छत्तीसगढ़ राज्योत्सव में अपने सामने सुनना राज्य के संगीत प्रेमियों के लिए एक अनूठा और यादगार अनुभव होगा।

प्रभंजय चतुर्वेदी – सुगम गायन

छत्तीसगढ़ में गजल गायकी की परंपरा को नई पीढ़ी में जिन्दा रखने वाले फनकारों में भिलाई के प्रभंजय चतुर्वेदी का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। शास्त्रीय गायन और सुगम संगीत की विधिवत शिक्षा लेने के बाद आपने आकाशवाणी के चयनित सुगम संगीत कलाकारों में भी अपना स्थान बनाया है। देश के अनेक प्रतिष्ठित मंचों पर अपनी गायकी से छाप छोड़ने वाले प्रभंजय चतुर्वेदी अपनी प्रस्तुतियों में खास तौर पर बशीर बद्र, दुष्यंत कुमार और निदा फाजिली जैसे शायरों के कलाम चुनते हैं।

अश्विनी वर्मा – गजल गायन

गजल गायकी की अनुभवी और पुरानी परंपरा का चिराग छत्तीसगढ़ के अलावा अन्य प्रांतों में भी रोशन रखने वाले अश्विनी वर्मा की गायकी में घराने की गमक है। पिता स्व. श्री रतनलाल वर्मा भी लाहौर घराने की गायकी से जुड़े हुए फनकार रहे। उन्हीं से मिली विरासत को आपने पूरी शिद्दत के साथ जिन्दा रखा है। आपकी गजल गायकी में उम्दा शायरी का रंग खास तौर पर उभरता है। आप सुर सिंगार संसद, मुम्बई से सम्मानित होने के साथ–साथ अनेक दीगर प्रतिष्ठित पुरस्कारों से नवाजे जा चुके हैं। आकाशवाणी और दूरदर्शन के चयनित कलाकारों में भी आप प्रथम पंक्ति में शामिल हैं।